ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 168-169**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

संस्कृत महाकाव्यों में वैष्णव धर्म के सिद्धान्त

डॉ0 राधा देवी

Received-12.03.2025, Revised-20.03.2025 Accepted-26.03.2025 **E-mail : radhadevilakhera4300@gmail.com**

सारांशः वैष्णव धर्म के लोग मुख्य रूप से भगवान् विष्णु का अपना प्रिय इष्ट मानते है। विष्णु एक वैदिक देवता है। वैष्णव धर्म में विष्णु से सम्बन्धित वैदिक सूक्त एवं आख्यान निहित है। ऋग्वेद में देवताओं के ऐश्वर्य, पराक्रम आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

इसके अतिरिक्त उपनिषदों में ज्ञान, दर्शन और सिद्धान्त इन सभी का समावेश भी वैष्णव धर्म में हुआ है। वैष्णव धर्म में नवधा भक्ति का वर्णन किया गया है। नवधा भक्ति इस प्रकार है– श्रवण, स्मरण, वंदन, अर्चन, पादसेवन, कीर्तन, सांख्य, दास्य तथा आत्मनिवेदन।

कुंजीभूत शब्द– संस्कृत महाकाव्य, श्रवण, स्मरण, वंदन, अर्चन, पादसेवन, कीर्तन, सांख्य, दास्य, वैदिक सूक्त, आख्यान

श्रवण– वैष्णव धर्म में कहा गया है ईश्वर की लीला का महत्व, कथा आदि की शक्ति और परमश्रद्धा सहित अतृप्त मन से हमेशा श्रवण करना चाहिए, जिससे प्राणी का कल्याण होता है।

वन्दन– वैष्णव धर्म के लोगों को ब्राह्मण, गुरूजन आचार्य, माता–पिता आदि का सम्मान करना चाहिए, जिससे उच्चमार्ग की प्राप्ति होती है।

स्मरण– वैष्णव धर्म के लोगों को सदैव ईश्वर के चरणों का स्मरण करना चाहिए तथा उनके प्रति सदैव समर्पण की भावना रखनी चाहिए।

अर्चन– वैष्णव धर्म के लोगों को ईश्वर के प्रति मन, कर्म और वाणी में वंदन करना चाहिए।

कीर्तन– वैष्णव धर्म में ईश्वर गुण चरित नाम आदि का आनन्द और उत्साह के साथ कीर्तन करना चाहिए, जिससे व्यक्ति को परमशान्ति मिलती है।

दास्य– वैष्णव धर्म के लोगों को परमेश्वर और स्वयं को दास समझकर सेवा करनी चाहिए।

आत्मनिवेदन– वैष्णव धर्म के मतानुयायियों को ईश्वर के चरणों में अपना जीवन हमेशा के लिए समर्पित कर देना चाहिए।

वैष्णवधर्म में मूर्तिपूजा और मन्दिरों आदि का महत्वपूर्ण स्थान दिखाई देता है लेकिन उन्होंने मूर्ति को ईश्वर का प्रत्यक्ष रूप माना है। भक्त मन्दिर में जाकर पूजा करते हैं इस धर्म के उपासक भगवान् विष्णु की पूजा कीर्तन करते है और वह पवित्र तीर्थों पर एकत्रित होकर स्थान–स्थान पर ध्यान करते हैं।

श्रीकृष्णचरितामृतम्– महाकाव्य में वैष्णव धर्म का विवेचन मिलता है। हे भगवान्! आप वैष्णव सम्प्रदाय में अति महान् है तथा आपकी बुद्धि का अनुराग श्रीकृष्ण पर समर्पित है। शिवजी को कृष्ण के रूप में मानते हुए शैव तथा वैष्णव धारा का उन्होंने प्रतिष्ठान किया, क्योंकि वह समाज एवं काव्य दोनों को अंलकृत करता है–

शैवोऽस्मि नाऽह्मघहन्। गदितं मृषा में
दुष्टं ह्यभूदहह। वैष्णव एवं सोऽस्मि।
अत्रापि हन्त! लपितं न मया सुचारू।
स्वामिन्! क्षमस्व तदुभौ श्रित एवं सोऽस्मि।।

हे त्रिभुवन नाथ भगवान हरि अपि सम्पूर्ण जगत् का उद्धार करने वाले है। सच्चिदानन्दमय श्रीकृष्णावतार में नानाप्रकार की अलौकिक लीलायें की और वाल्यावस्था में वृन्दावन जाकर तरूण एवं किशोर अवस्था में मथुरा जाकर समस्त असुरों का तुष्टामान से उनका संहार किया। इस चराचर जगत् में एकमात्र गुरू भगवान् विष्णु है तथा वह अनन्तशेष रूप में (बलराम) प्रकट हुए–

अग्रतत्राऽखिलभवगुरोर्जन्मतः शौरवीर्यात्।
प्रादुर्भूतो हलधरविभुस्तत्कलानन्तरूपः।।
सेवां कर्ता प्रियाहितरतस्तस्य सेव्यस्य विष्णो–
र्भायां श्रित्वा कृतवहुविधां मोहयन्तीजगत् ताम्।।

हे नाथ! व्यवहार की दृष्टि में आपकी माता हूँ और मुझे शिशुरूप में देखने की इच्छा हो रही है। अतः आप वही रूप धारण कर मेरा उपसंहार कीजिए। देवकी इस बात को सुनकर संसार में अपने माता–पिता की दुर्गति की देखकर भगवान् विष्णु का हृदय करूणा से भर आया–

श्रृत्वा गिरं सभयगद्गदकम्पमुक्तां
दृष्ट्वा च दुर्गतिततिं भवगां स्वपित्रोः
कारूण्यपूर्णहृदयो भगवान् स
विष्णुस्ताबूच ईश्वरगतिं प्रथमन् स्वकीयाम्।।

हे शिव! आप साक्षात् शंकराचार्य हैं और आपने समस्त वैष्णव धर्म को अपनाया है। वैष्णव धर्म का आश्रय लेने वाले तथा अनन्यभाव से उनका ध्यान करते हुए और शंख, चक्रधारी पुरातन पुरुष श्रीहरि रूप में है। अतः संसार की सृष्टि करने वाले तथा आप सबको सहारा देने वाले हैं। विष्णु ने कहा कि हे देवी, आप समस्त देह धारियों के मन्दिर में निवास कीजिए। अतः देवी जी इस बात को स्वीकार करती हुई कहती है कि शिवजी विष्णु को भजते हैं तथा गणेश जी सूर्यदेव की उपासना करते है। अर्थात् इन सबके हृदय में निवास करूंगी–

मामग्रजो विष्णुरूवाच यत्पुनस्त्वं देवि। चित्ते वस देहिनामिति।।
सम्पाद्यमेतच्चमया धिया धृतं वसामि मूर्तो हृदि चापि तद्धयहम्।।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

हे ईश्वर। आप जगत् का उद्धार करने वाले हैं तथा अपना ध्येय, आत्मा से परमतत्वमयी विष्णुजी की स्तुति की। उनका शरीर धर्म, सदाचार, श्रुति यज्ञ और वह इन सब का आश्रय लेकर उन्होंने गौ तथा ब्राह्मणों को पोषण किया है–

शरीरं विशेषेण तस्यास्ति धर्मः।
सदाचारः एवं श्रुतिर्यज्ञ एवं।
इमानेक चाश्रित्य गा ब्राह्मणांश्च स
पुष्णाति तस्मात्त एवाऽत्र वध्याः।।

हे प्रभो! जब विष्णों शक्तिहीन हो जाते है तो देवता भी नष्टप्रायः हो जाते है, इसलिए आप इस कार्य के लिए आदेश दीजिए। वैष्णव धर्म में नवधा भक्ति का उल्लेख मिलता है–

नामसंकीर्तनं तत्कथायां रतिः सर्वदा विष्णुपादाङ्गु लेश्चिन्तनम्।
पादसेवार्चनं वन्दनं सख्यकं दास्यभावात्मभावेन संवेदनम्।

द्वारकाधीश महाकाव्य में वैष्णव धर्म के सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। वैष्णव धर्म के लोग एक समूह में बैठकर तालियों बजाकर कीर्तन करते हैं और वह गोविन्द नाम का उच्चारण करते है, जो दैत्यों का संहार करने वाले, शंख, चक्र, पीताम्बर को धारण करते हैं–

द्वारकानगर– रचनाकारी भयहारी वै
दितिकुलसंहारी काम–मानहारी ज्ञायताम्।
शंख–चक्र, गदा–पद्मधारी पीताम्बरधारी
भक्त–हितकारीनर–दुःख–हारी ज्ञायताम्।।
वसुदेव–देवकी–मनो•भिलाषं–पूर्णकारी
भूमि–भारहारी मुनिमनोहारी ज्ञायताम्।
विपिन–विहारी गोपबाल–सुखकारीसदा
गोवर्धन–धारी पार्थसहचारी ज्ञायताम्।।

वैष्णवधर्म में वल्लभसम्प्रदाय को आदरणीय स्थान दिया गया है तथा उन्होंने गोवर्धन महाराज की पूजा करते हुए गोप एवं गायों में सुख का अनुभव किया है।

वाल्लभानां तथा वैष्णवानां धनम्।
प्राणतो•पि प्रियोयत्रः नाथाधिपः।।
सौख्यमा मन्यते गोप–वालैर्युतः।
राजते रौख्यदः सैव गोवर्धनः।।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. श्रीमद्भागवतपुराण 7/5
2. श्रीकृष्णचरितामृतम् महा० 2/297
3. श्रीकृष्णचरितामृतम् महा० 10/23
4. कृष्णोदयम् महा० 10/47
5. श्रीकृष्णचरितामृतम् महा० 11/13
6. द्वारकाधीश महा० 15/28
7. द्वारकाधीश महा० 6/93

*****